परदेस में देश

अमरेंद्र मिश्र

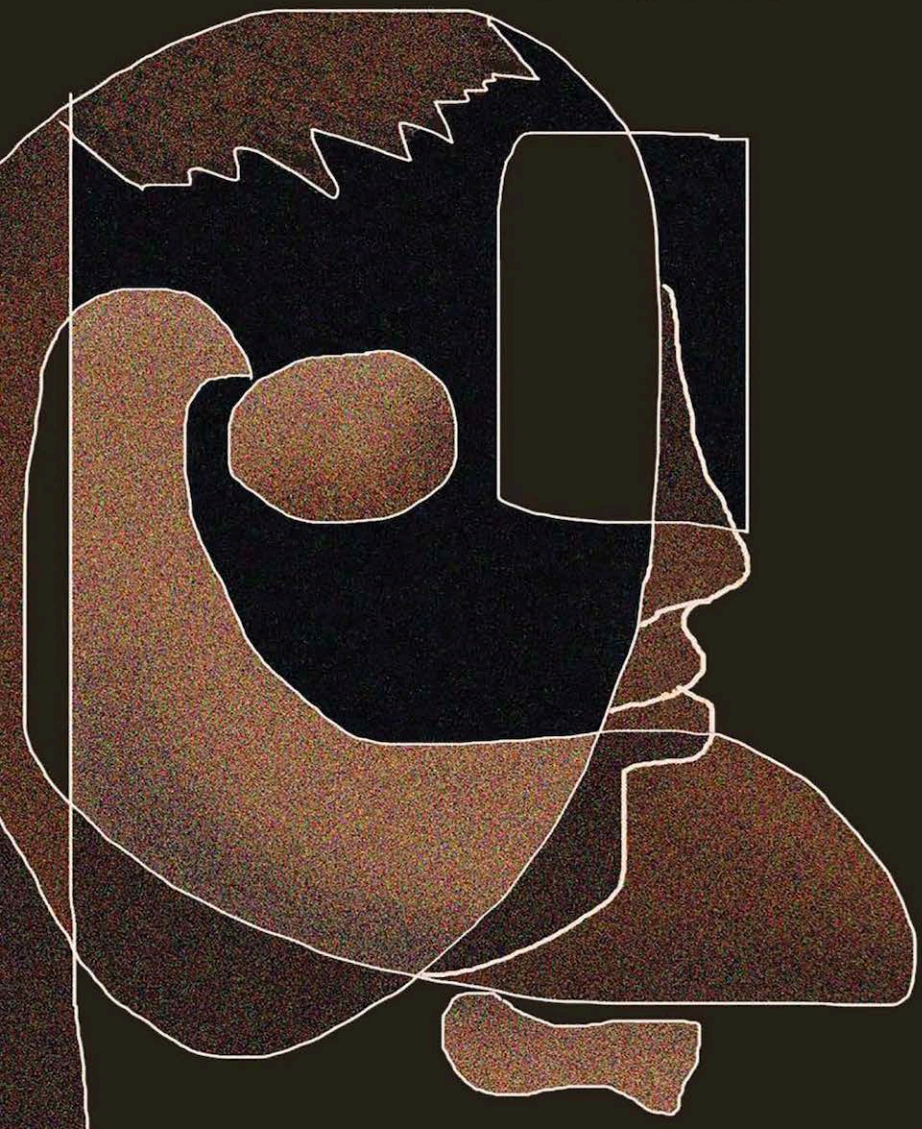

अमरेंद्र मिश्र

- मूलत: कथाकार। 'गलत नंबर', 'प्रेत छाया', 'कुछ दूर तक साथ', 'संवाद चुपचाप', 'रात भर छत पर', 'चुनी हुई कहानियाँ', 'उस रात की बात', 'टापू पर अकेले', 'नहीं, यह अंत नहीं', 'मालिक की मछली', 'एक रात' कहानी-संग्रह
- 'कर्मकांड' उपन्यास
- 'खुद के खिलाफ़' कविता संग्रह, मॉरीशस की कवयित्री शकुंतला हवलदार की कृति का हिंदी अनुवाद 'पागल आदमी का गीत'
- 'रेणु' के कथा-साहित्य पर शोध। 'फणीश्वरनाथ 'रेणु' के उपन्यासों में राजनैतिक परिप्रेक्ष्य' शीर्षक पुस्तक, संस्मरणों की किताब 'बीते बरस'
- तेलुगु तथा कज़ाक भाषा में कहानियाँ अनूदित
- भारत में सांस्कृतिक केंद्र चेन्नई और विदेशों में भारतीय सांस्कृतिक केंद्र- मॉरीशस, अलमाटी और मालदीव में निदेशक के पद पर कार्यरत और उन देशों पर केंद्रित सामाजिक-सांस्कृतिक रिश्तों पर कहानियाँ। 'जवाहरलाल नेहरू एंड एशियन को-ऑपरेशन' किताब रूसी, कज़ाक और अंग्रेजी भाषा में लेखों के साथ संपादित और प्रकाशित
- महात्मा गाँधी की जीवनी-कज़ाक भाषा में संपादित व प्रकाशित
- स्वतंत्र लेखन और पत्रकारिता

संप्रति- 'समहुत' हिंदी साहित्यिक त्रैमासिक पत्रिका का संपादन

संपर्क- 'मौसम', 4/516, पार्क एवेन्यू, वैशाली, गाजियाबाद-201010

फोन- 98735-25152

₹ 650.00

लिटिल बर्ड पब्लिकेशंस

नई दिल्ली

फोन : 99682-88050, 82879-88726

ISBN 978-93-93091-02-4

परदेस में देश

परदेस में देश

अमरेंद्र मिश्र

लिटिल बर्ड पब्लिकेशंस

लिटिल बर्ड पब्लिकेशंस

I.S.B.N # 978-93-93091-02-4

4637/20, शॉप नं.-एफ-5, प्रथम तल, हरि सदन,

अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

मो.: 9968288050, 9911866239

ई-मेल: littlebirdinfo21@gmail.com

प्रथम संस्करण : 2022

© अमरेंद्र मिश्र

मूल्य : ₹ 650/-

लेज़र कम्पोजिंग/आवरण : लिटिल बर्ड, नई दिल्ली

मुद्रक : क्लासिक प्रिंटर्स, दिल्ली

PARDES MEIN DESH

by AMRENDRA MISHRA

इस पुस्तक के किसी भी अंश को किसी भी माध्यम में प्रयोग करने के लिए लेखक/प्रकाशक से लिखित अनुमति लेना अनिवार्य है।

विदेश प्रवास के एक दशक के नाम...

अनुक्रम

1. अलमाटी 9

2. चेन्नई 164

3. दिल्ली 224

4. मालदीव 281

अलमाटी

अलमाटी के लिए मेरी नियुक्ति एक नाटकीय ढंग से हुई थी! आइ.सी.सी.आर. में मैं डायरेक्ट डी.जी. के साथ काम करता था। मुझ द्वारा भेजी गयी फाइलें सीधा उनके चैंबर में जाती थीं और उनके हमारे बीच कोई और चैनल नहीं था। आइ.सी.सी.आर. में ऐसा पहली बार ही हु आ था कि किसी अधिकारी के सभी पेपर्स और सभी फाइलें डायरेक्ट डीजी तक जाएं! और डी जी ने स्वयं यह व्यवस्था दी थी जिसके लिए मैं कभी चाहा ही नहीं था।

मेरे पास आइ.सी.सी.आर में दूसरे तरह का काम था। मॉरीशस में मेरे कार्यकाल की समाप्ति के बाद जब मैं हेडक्वार्टर्स ज्वाइन किया था तब मुझे जो असाइनमेंट मिला था वह विदेशी छात्रों की हमारे यहां छात्रवृत्ति मिलने और उनके यहां अध्ययन को लेकर था। किसी सरकारी बाबू ने इस विशेष काम के साथ एक सेक्शन बना दिया था और नामकरण किया– "विदेशी छात्रवृत्ति विभाग", यह नाम मुझे एकदम अच्छा नहीं लगा था। मैं चाह रहा था कि 'विदेशी छात्र विभाग' रखा जाए और 'छात्रवृत्ति' शब्द हटा दिया जाए! यह न हो सका और मुझे बताया गया कि जैसा जो चल रहा है उसमें रत्ती भर भी बदलाव संभव नहीं है। इससे आगे का मेरा कोई प्रयास बेमतलब का प्रयास करने जैसा था, यह बात मैं जानता था। हमारा सिस्टम ऐसा ही है। कुछ नियम और उपनियम तो बहुत ही अच्छे बना दिए गए हैं जिसके फ्रेम में अनुशासन को फोकस किया गया है। सभी सरकारी नियम-उपनियम अनुशासन के दायरे में बंधे हैं और उन्हें हमें मानना होता है। इसमें रत्ती भर की यह गुंजायश नहीं कि हम इसमें जरा भी हेर-फेर या बदलाव करें।